

- न नौ मन तेल होगा,
न राधा नाचेगी
- न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी
- नाच न आवे आंगन टेढ़ा
- नादान दोस्त से अक्लमंद
दुश्मन भला
- नाम बड़े और दर्शन छोटे
नेकी कर दरिया में डाल
- नौ दिन चले अढ़ाई कोस
- नौ नकद न तेरह उधार
- नौ सौ चूहे खाय बिल्ली
हज को चली
- पर उपदेश कुशल बहुतेरे
- पराधीन सपनेहुँ सुख नहीं
- पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती
- पूत के पाँव पालने में ही
पहचाने जाते हैं
- प्यादा से फ़रजी भयो,
टेढ़ो-टेढ़ो जाय
- = किसी कठिन काम को करने के लिए किसी धूर्त आदमी के द्वारा ऐसी शर्तें रख देना कि वह काम पूरा न हो सके या कठिन शर्तों को पूरा करना असंभव हो।
- = 1. किसी प्रकार की अशांति, कलह आदि को समाप्त करने के लिए उसके मूल कारण को नष्ट करना आवश्यक है।
2. झगड़े के मूल कारण को नष्ट करना।
- = मूर्ख व्यक्ति अपनी क्षमता या गुणों को दरकिनार कर साधनों को दोष देता है।
- = अज्ञानी दोस्त अच्छा नहीं।
- = प्रसिद्ध व्यक्ति होने पर भी उसका आचरण ओछा है।
- = किसी पर उपकार कर उपकार को भूल जाना चाहिए।
- = बहुत सुस्ती से कार्य का किया जाना।
- = अधिक मूल्य पर उधार बेचने की अपेक्षा उचित कम मूल्य पर नकद बेचना अच्छा है।
- = जीवन भर बहुत से पाप करने वाला व्यक्ति वृद्धावस्था में या बाद में संत बनने का ढोंग या दिखावा करता है।
- = दूसरों को उपदेश देने वाले बड़ी सरलता से मिल जाते हैं किंतु स्वयं सदाचरण करने वाले लोग बहुत कम होते हैं।
- = पराधीनता में कभी सुख नहीं मिलता, पराधीनता अभिशाप है।
- = सब मनुष्य आकृति रूप, गुण आदि की दृष्टि से समान नहीं होते।
- = होनहार बालक के लक्षण प्रारंभ से ही पहचान में आ जाते हैं।
- = साधारण स्थिति से समृद्ध होने पर या छोटे पद से उच्चपद पर पहुँचने पर व्यक्ति का घमंडी होना।